الجزء ١٠

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَاَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ

उस का पांचवा हिस्सा	अल्लाह के वास्ते	सो	किसी चीज़	से	तुम ग़नीमत लो	जो कुछ	और तुम जान लो

وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ

और मुसाफ़िरों	और मिस्कीनों	और यतीमों	और क़राबतदारों के लिए	और रसूल के लिए

اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ

फ़ैसले के दिन	अपना बन्दा	पर	हम ने नाज़िल किया	और जो	अल्लाह पर	ईमान रखते	तुम हो	अगर

يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤١﴾

41	क़ुदरत वाला	हर चीज़	पर	और अल्लाह	दोनों फ़ौजें भिड़ गईं	जिस दिन

اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى

परला	किनारे पर	और वह	इधर वाला	किनारे पर	तुम	जब

وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ ۙ

वादे में	अलबत्ता तुम इख़्तिलाफ़ करते	तुम बाहम वादा करते	और अगर	तुम से	नीचे	और क़ाफ़िला

وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۬ۙ لِّيَهْلِكَ

ताकि हलाक हो	हो कर रहने वाला	था	जो काम	अल्लाह	ताकि पूरा कर दे	और लेकिन

مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ

और बेशक	दलील	से	ज़िन्दा रहना है	जिस	और ज़िन्दा रहे	दलील	से	हलाक हो	जो

اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ ۙ اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ

थोड़ा	तुम्हारी ख़्वाब	में	अल्लाह	तुम्हें दिखाया उन्हें	जब	42	जानने वाला	सुनने वाला	अल्लाह

وَلَوْ اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْاَمْرِ

मामले में	और तुम झगड़ते	तो तुम बुज़दिली करते	बहुत ज़ियादा	तुम्हें दिखाता उन्हें	और अगर

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٤٣﴾

43	दिलों की बात	जानने वाला	बेशक वह	बचा लिया	अल्लाह	और लेकिन

وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ اَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ

और तुम्हें थोड़े करके दिखलाए	थोड़ा	तुम्हारी आँखें	में	तुम आमने सामने हुए	जब-तो	वह तुम्हें दिखलाए	और जब

فِيْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ

और अल्लाह की तरफ़	हो कर रहने वाला	था	काम	ताकि पूरा कर दे अल्लाह	उन की आँखें	में

ع ٥/١ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿٤٤﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً

कोई जमाअत	तुम्हारा आमना सामना हो	जब	ईमान वाले	ऐ	44	काम (जमा)	लौटना (बाज़गश्त)

فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٤٥﴾ ۚ

45	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	बकसरत	और अल्लाह को याद करो	तो साबित क़दम रहो

और जान लो कि तुम जो कुछ किसी चीज़ से ग़नीमत हासिल किया है उस का पांचवा हिस्सा अल्लाह के लिए और रसूल के लिए, और (उन के) क़राबतदारों के लिए, और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और जो हम ने अपने बन्दे पर फ़ैसला (बद्र) के दिन नाज़िल किया। जिस दिन (कुफ़्र ओ इस्लाम की) दोनों फ़ौजें भिड़ गईं, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है। (41)

जब तुम इधर वाले किनारे पर थे और वह परले किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुम से नीचे (तराई में) था, अगर (तुम और काफ़िर) बाहम ते करलेते तो अलबत्ता तुम वादे में इख़्तिलाफ़ करते (वक़्त पर न पहुँचते) लेकिन (अल्लाह ने जमा किया) ताकि पूरा कर दे अल्लाह वह काम जो हो कर रहने वाला था, ताकि जो हलाक हो वह दलील से हलाक हो और जिस को ज़िन्दा रहना है वह ज़िन्दा रहे दलील से, और बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (42)

और जब अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी ख़्वाब में उन (काफ़िरों) को दिखाया थोड़ा, और अगर तुम्हें उन (की तादाद) को बहुत दिखाता तो तुम बुज़दिली करते, और (जंग के) मामले में झगड़ते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, बेशक वह दिलों की बात जानने वाला है। (43)

और जब तुम आमने सामने हुए तो वह (अल्लाह) तुम्हें दिखलाए तुम्हारी आँखों में (दुश्मन को) थोड़े, और तुम्हें उन की आँखों में दिखलाया थोड़ा ताकि अल्लाह पूरा कर दे वह काम जो हो कर रहने वाला था, और तमाम कामों की बाज़गश्त अल्लाह की तरफ़ है। (44)

ऐ ईमान वालो! जब किसी जमाअते (कुफ़्फ़ार) से तुम्हारा आमना सामना हो तो साबित क़दम रहो और अल्लाह को बकसरत याद करो ताकि तुम फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाओ। (45)

और इताअ़त करो अल्लाह की और उस के रसूल (स) की, और आपस में झगड़ा न करो कि बुज़दिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा जाती रहेगी (उखड़ जाएगी) और सब्र करो, बेशक अल्लाह साथ है सब्र करने वालों के। **(46)**

और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से निकले इतराते और लोगों के दिखावे को, और अल्लाह के रास्ते से रोकते हुए, और वह जो करते हैं अल्लाह अहाता किए हुए है। **(47)**

और जब शैतान ने उन के काम ख़ुशनुमा कर के दिखाए, और कहा आज लोगों में से तुम पर कोई ग़ालिब (आने वाला) नहीं, और मैं तुम्हारा रफ़ीक़ (हिमायती) हूँ, फिर जब दोनों लशकर आमने सामने हुए तो अपनी एड़ियों पर उलटा फिर गया और बोला मैं तुम से ला तअ़ल्लुक़ हूँ, मैं देखता हूँ जो तुम नहीं देखते, मैं अल्लाह से डरता हूँ (कि मुझे हलाक न कर दे) और अल्लाह सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। **(48)**

जब मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में मरज़ था कहने लगे कि उन्हें (मुसलमानों को) उन के दीन ने ख़ब्त में मुब्तला कर रखा है, और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(49)**

और अगर तू देखे जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकालते हैं, मारते (जाते) हैं उन के चहरों और उन की पीठों पर और (कहते जाते हैं) दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखो। **(50)**

यह उस का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने (आमाल) आगे भेजे हैं और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं। **(51)**

जैसा कि फ़िरऔ़न वालों का और उन से पहले लोगों का दस्तूर था, उन्हों ने अल्लाह की आयतों का इन्कार किया, और अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, बेशक अल्लाह कुव्वत वाला सख़्त अ़ज़ाब देने वाला है। **(52)**

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ

और जाती रहेगी	पस बुज़दिल हो जाओगे	और आपस में झगड़ा न करो	और उस का रसूल	अल्लाह	और इताअ़त करो

رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۚ ﴿٤٦﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا

और न हो जाना	46	सब्र करने वाले	साथ	बेशक अल्लाह	और सब्र करो	तुम्हारी हवा

كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ

लोग	और दिखावा	इतराते	अपने घर	से	निकले	उन की तरह जो

وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ﴿٤٧﴾

47	अहाता किए हुए	वह करते हैं	से-जो	और अल्लाह	अल्लाह का रास्ता	से	और रोकते

وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ

तुम्हारे लिए (तुम पर)	कोई ग़ालिब नहीं	और कहा	उन के काम	शैतान	उन के लिए	ख़ुशनुमा कर दिया	और जब

الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَاِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ

दोनों लशकर	आमने सामने हुए	फिर जब	तुम्हारा	रफ़ीक़	और बेशक मैं	लोग	से	आज

نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ اِنِّيْٓ اَرٰى مَا لَا

नहीं	जो	देखता हूँ	मैं बेशक	तुम से	जुदा, ला तअ़ल्लुक़	बेशक मैं	और बोला	अपनी एड़ियां	पर	उलटा फिर गया

تَرَوْنَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤٨﴾ ع اِذْ يَقُوْلُ ع ٦ ٢

कहने लगे	जब	48	अ़ज़ाब	सख़्त	और अल्लाह	अल्लाह से डरता हूँ	मैं बेशक	तुम देखते

الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ

उन का दीन	उन्हें	धोका दे दिया	मरज़	उन के दिलों में	और वह जो कि	मुनाफ़िक़ (जमा)

وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٤٩﴾

49	हिक्मत वाला	ग़ालिब	तो बेशक अल्लाह	अल्लाह पर	भरोसा करे	और जो

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ

मारते हैं	फ़रिश्ते	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	जान निकालते हैं	जब	तू देखे	और अगर

وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ ﴿٥٠﴾ ذٰلِكَ

यह	50	भड़कता हुआ (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	और चखो	और उन की पीठ (जमा)	उन के चहरे

بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۙ ﴿٥١﴾

51	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	नहीं	और यह कि अल्लाह	तुम्हारे हाथ	आगे भेजे	बदला जो

كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयतों का	उन्हों ने इन्कार किया	उन से पहले	और जो लोग	फ़िरऔ़न वाले	जैसा कि दस्तूर

فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

52	अ़ज़ाब	सख़्त	कुव्वत वाला	बेशक अल्लाह	उनके गुनाहों पर	तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ा

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى

जब तक	किसी क़ौम को	उसे दी	कोई नेमत	बदलने वाला	नहीं है	इस लिए कि अल्लाह	यह

يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٥٣﴾ كَدَاْبِ

जैसा कि दस्तूर	53	जानने वाला	सुनने वाला	और यह कि अल्लाह	उन के दिलों में	जो	वह बदलें

اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ

तो हम ने उन्हें हलाक कर दिया	अपना रब	आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	उन से पहले	और वह लोग जो	फ़िरऔन वाले

بِذُنُوْبِهِمْ وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ﴿٥٤﴾

54	ज़ालिम	थे	और सब	फ़िरऔन वाले	और हम ने ग़र्क़ कर दिया	उन के गुनाहों के सबब

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٥﴾

55	ईमान नहीं लाते	सो वह	कुफ़्र किया	वह जिन्हों ने	अल्लाह के नज़दीक	जानवर (जमा)	बदतरीन	बेशक

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ

हर बार	में	अपना मुआहदा	तोड़ देते हैं	फिर	उन से	तुम ने मुआहदा किया	वह लोग जो

وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ

उन के ज़रीए	तो भगा दो	जंग में	तुम उन्हें पाओ	पस अगर	56	डरते नहीं	और वह

مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ

किसी क़ौम	से	तुम्हें ख़ौफ़ हो	और अगर	57	इब्रत पकड़ें	अजब नहीं कि वह	उन के पीछे	जो

ع ١٠ / ٣ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَآءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْخَآئِنِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	दग़ाबाज़ (जमा)	पसन्द नहीं करता	बेशक अल्लाह	बराबरी	पर	उन की तरफ़	तो फेंक दो	ख़ियानत (दग़ाबाज़ी)

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ؕ اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	वह आजिज़ न कर सकेंगे	बेशक वह	बाज़ी ले गए	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और हरगिज़ ख़याल न करें

وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ

पले हुए घोड़े	और से	कुव्वत	से	तुम से हो सके	जो	उन के लिए	और तैयार रखो

تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ

उन के सिवा	से	और दूसरे	और तुम्हारे (अपने) दुश्मन	अल्लाह के दुश्मन	उस से	धाक बिठाओ

لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	में	कुछ	तुम ख़र्च करोगे	और जो	अल्लाह जानता है उन्हें	तुम उन्हें नहीं जानते

يُوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ

सुलह की तरफ़	वह झुकें	और अगर	60	तुम्हारा नुक़्सान न किया जाएगा	और तुम	तुम्हें	पूरा पूरा दिया जाएगा

فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦١﴾

61	जानने वाला	सुनने वाला	वह	बेशक	अल्लाह पर	और भरोसा रखो	उस की तरफ़	तो सुलह कर लो

यह इस लिए है कि अल्लाह (कभी) उस नेमत को बदलने वाला नहीं जो उस ने किसी क़ौम को दी जब तक वह (न) बदल डालें जो उन के दिलों में है (अपना अक़ीदा ओ अहवाल) और यह कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (53)

जैसा कि दस्तूर था फ़िरऔन वालों का और उन लोगों का जो उन से पहले थे, उन्हों ने अपने रब की आयतों को झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के गुनाहों के सबब हलाक कर दिया और फ़िरऔन वालों को ग़र्क़ कर दिया, और वह सब ज़ालिम थे। (54)

बेशक अल्लाह के नज़दीक सब जानवरों से बदतर वह लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया, सो वह ईमान नहीं लाते। (55)

वह लोग जिन से तुम ने मुआहदा किया, फिर वह अपना मुआहदा तोड़ देते हैं हर बार, और वह डरते नहीं। (56)

पस अगर तुम उन्हें जंग में पाओ तो (उन्हें ऐसी सज़ा दो कि) उन के ज़रीए भगा दो उन को जो उन के पीछे हैं, अजब नहीं कि वह इब्रत पकड़ें। (57)

अगर तुम्हें किसी क़ौम से दग़ा बाज़ी का डर हो तो (उन का मुआहदा) फेंक दो उन की तरफ़ बराबरी पर (बराबरी का जवाब दो), बेशक अल्लाह दग़ाबाज़ों को पसन्द नहीं करता। (58)

और काफ़िर हरगिज़ ख़याल न करें कि वह बाज़ी ले गए, बेशक वह आजिज़ न कर सकेंगे। (59)

और उन के (मुक़ाबले के) लिए तैयार रखो कुव्वत जो तुम से हो सके और पले हुए घोड़े, उस से धाक बिठाओ अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर, और दूसरों पर उन के सिवा जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें जानता है, और तुम जो कुछ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा दिया जाएगा और तुम्हारा नुक़्सान न किया जाएगा। (60)

और अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो (तुम भी) उस (सुलह) की तरफ़ झुको, और अल्लाह पर भरोसा रखो, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (61)

وَاِنْ يُّرِيْدُوْٓا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْٓ

जिस ने	वह	तुम्हारे लिए काफ़ी है अल्लाह	तो बेशक	तुम्हें धोका दें	कि	वह चाहें	और अगर

اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ

तुम ख़र्च करते	अगर	उन के दिल	दरमियान (में)	और उल्फ़त डाल दी	62	और मुसलमानों से	अपनी मदद से	तुम्हें ज़ोर दिया

مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّآ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ

अल्लाह	और लेकिन	उन के दिल	में	उल्फ़त डाल सकते	न	सब कुछ	ज़मीन	में	जो

اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٣﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ

अल्लाह	काफ़ी है तुम्हें	नबी (स)	ऐ	63	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक वह	उन के दरमियान	उल्फ़त डाल दी

وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٤﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ع ٨ ٦ ٢

मोमिन (जमा)	तरग़ीब दो	नबी (स)	ऐ	64	मोमिन (जमा)	से	तुम्हारे पैरू हैं	और जो

عَلَى الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا

ग़ालिब आएंगे	सब्र वाले	बीस (20)	तुम में से	हों	अगर	क़िताल (जिहाद)	पर

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفًا مِّنَ

से	एक हज़ार (1000)	वह ग़ालिब आएंगे	एक सो (100)	तुम में से	हों	और अगर	दो सो (200)

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ

तुम से	अल्लाह ने तख़फ़ीफ़ कर दी	अब	65	समझ नहीं रखते	लोग	इस लिए कि वह	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا

वह ग़ालिब आएंगे	सब्र वाले	एक सो (100)	तुम में से	पस अगर हों	कमज़ोरी	तुम में	कि	और मालूम कर लिया

مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ اَلْفٌ يَّغْلِبُوْٓا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह के हुक्म से	दो हज़ार (2000)	वह ग़ालिब रहेंगे	एक हज़ार (1000)	तुम में से	हों	और अगर	दो सो (200)

وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ اَسْرٰى حَتّٰى

जब तक	क़ैदी	उस के	हों	कि	किसी नबी के लिए	नहीं है	66	सब्र वाले	साथ	और अल्लाह

يُثْخِنَ فِى الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ

चाहता है	और अल्लाह	दुनिया	माल	तुम चाहते हो	ज़मीन	में	ख़ूनरेज़ी कर ले

الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٧﴾ لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ

पहले ही	अल्लाह से	लिखा हुआ	अगर न	67	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	आख़िरत

لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ اَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٦٨﴾ فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ

तुम्हें ग़नीमत में मिला	उस से जो	पस खाओ	68	बड़ा	अज़ाब	तुम ने लिया	उस में जो	तुम्हें पहुँचता

حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٦٩﴾ ع ٩ ٥ ٥

69	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो	पाक	हलाल

और अगर वह तुम्हें धोका देना चाहें तो बेशक तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है, वह जिस ने तुम्हें अपनी मदद से और मुसलमानों से ज़ोर दिया। (62)

और उल्फ़त डाल दी उन के दिलों में, अगर तुम सब कुछ ख़र्च कर देते जो ज़मीन में है उन के दिलों में उल्फ़त न डाल सकते थे लेकिन अल्लाह ने उन के दरमियान उल्फ़त डाल दी, बेशक वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (63)

ऐ नबी (स)! अल्लाह काफ़ी है तुम्हें और तुम्हारे पैरू मोमिनों के लिए। (64)

ऐ नबी (स)! मोमिनों को जिहाद पर तरग़ीब दो, अगर तुम में से बीस (20) सब्र वाले (साबित क़दम) होंगे तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, और अगर तुम में से एक सो (100) हों तो वह एक हज़ार (1000) काफ़िरों पर ग़ालिब आएंगे, इस लिए कि वह लोग (काफ़िर) समझ नहीं रखते। (65)

अब अल्लाह ने तुम से तख़फ़ीफ़ कर दी, और मालूम कर लिया कि तुम में कमज़ोरी है, पस अगर तुम में से एक सो (100) सब्र वाले हों तो वह दो सो (200) पर ग़ालिब आएंगे, अगर तुम में से एक हज़ार (1000) हों तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार (2000) पर ग़ालिब रहेंगे और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। (66)

किसी नबी के लिए (लाइक़) नहीं कि उस के (क़ब्ज़े में) क़ैदी हूँ जब तक वह ज़मीन में दुश्मनों को अच्छी तरह कुचल न दे, तुम दुनिया का माल चाहते हो, और अल्लाह आख़िरत चाहता है, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (67)

अगर अल्लाह (की तरफ़) से पहले ही लिखा हआ न होता तो उस (फ़िदया) के लेने की वजह से तुम्हें पहुँचता बड़ा अ़ज़ाब। (68)

पस उस में से खाओ जो तुम्हें ग़नीमत में हलाल पाक मिला, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (69)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ اَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْاَسْرٰٓى ۙ اِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ

में	मालूम कर लेगा अल्लाह	अगर	क़ैदी	से	तुम्हारे हाथ	में	उन से जो	कह दें	नबी	ऐ

قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ اُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	तुम्हें	और बख़्शदेगा	तुम से	लिया गया	उस से जो	तुम्हें देगा बेहतर	कोई भलाई	तुम्हारे दिल

رَّحِيْمٌ ﴿٧٠﴾ وَاِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ

इस से क़ब्ल	तो उन्हों ने ख़ियानत की अल्लाह से	आप (स) से ख़ियानत का	वह इरादा करेंगे	और अगर	70	निहायत मेहरबान

فَاَمْكَنَ مِنْهُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا

और उन्हों ने हिज्रत की	ईमान लाए	जो लोग	बेशक	71	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	उन से (उन्हें)	तो क़ब्ज़े में दे दिया

وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا

ठिकाना दिया	और वह लोग जो	अल्लाह का रास्ता	में	और अपनी जानें	अपने मालों से	और जिहाद किया

وَّنَصَرُوْٓا اُولٰۗىِٕكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	और वह लोग जो	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़	उन के बाज़	वही लोग	और मदद की

وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ۚ

वह हिज्रत करें	यहां तक कि	कुछ शै (सरोकार)	उन की रफ़ाक़त	से	तुम्हें नहीं	और उन्हों ने हिज्रत न की

وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰي قَوْمٍ

वह क़ौम	पर (ख़िलाफ़)	मगर	मदद	तो तुम पर (लाज़िम है)	दीन में	वह तुम से मदद मांगें	और अगर

بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٧٢﴾ وَالَّذِيْنَ

और वह लोग	72	देखने वाला	तुम करते हो	जो	और अल्लाह	मुआहदा	और उन के दरमियान	तुम्हारे दरमियान

كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ بَعْضٍ ۭ اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	फ़ित्ना	होगा	अगर तुम ऐसा न करोगे	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़	उन के बाज़	जिन्हों ने कुफ़्र किया

وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ﴿٧٣﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ

में	और जिहाद किया उन्हों ने	और उन्हों ने हिज्रत की	ईमान लाए	और वह लोग जो	73	बड़ा	और फ़साद

سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ

मोमिन (जमा)	वह	वही लोग	और मदद की	ठिकाना दिया	और वह लोग जो	अल्लाह का रास्ता

حَقًّا ۭ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٤﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ

उस के बाद	ईमान लाए	और वह लोग जो	74	इज़्ज़त	और रोज़ी	बख़्शिश	उन के लिए	सच्चे

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ مِنْكُمْ ۭ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ

और क़राबतदार	तुम में से	पस वही लोग	तुम्हारे साथ	और उन्हों ने जिहाद किया	और उन्हों ने हिज्रत की

بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٧٥﴾

75	जानने वाला	हर चीज़	बेशक अल्लाह	अल्लाह का हुक्म	में (रू से)	बाज़ (दूसरे) के	क़रीब (ज़ियादा हक़ दार)	उन के बाज़

ع ١٠ ٦ الربع

ऐ नबी (स)! आप (स) के हाथ (क़ब्ज़े) में जो क़ैदी हैं, उन से कह दें कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई मालूम कर लेगा तो तुम्हें उस से बेहतर देगा जो तुम से लिया गया और वह तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (70)

और अगर आप (स) से ख़ियानत का इरादा करेंगे तो उन्हों ने उस से क़ब्ल अल्लाह से ख़ियानत की तो अल्लाह ने उन्हें (तुम्हारे) क़ब्ज़े में दे दिया, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (71)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगे ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत न की, तुम्हें नहीं है कुछ सरोकार उन की रफ़ाक़त से, यहां तक कि वह हिज्रत करें, और अगर वह तुम से दीन में मदद मांगें तो तुम पर मदद लाज़िम है, मगर उस क़ौम के ख़िलाफ़ नहीं जिस के और तुम्हारे दरमियान मुआहदा हो, और जो तुम करते हो अल्लाह उसे देखने वाला है। (72)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, अगर तुम ऐसा न करोगे तो फ़ित्ना होगा ज़मीन में और बड़ा फ़साद (होगा)। (73)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और जिहाद किया अल्लाह के रास्ते में, और जिन लोगों ने ठिकाना दिया और मदद की वही लोग सच्चे मोमिन हैं, उन के लिए बख़्शिश और इज़्ज़त की रोज़ी है। (74)

और जो लोग उस के बाद ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और तुम्हारे साथ (मिल कर) जिहाद किया पस वही तुम में से हैं, और क़राबतदार (आपस में) एक दूसरे के ज़ियादा हक़ दार हैं अल्लाह के हुक्म से, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (75)

آيَاتُهَا ١٢٩ ❀ (٩) سُوْرَةُ التَّوْبَـةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

रुकुआत 16 (9) सूरतुत तौबा आयात 129

بَـرَآءَةٌ مِّـنَ اللّٰهِ وَرَسُـوْلِـهٖٓ اِلَـى الَّـذِيْـنَ عٰهَدْتُّمْ مِّـنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١﴾

1	मुश्रिकीन	से	तुम से अ़हद किया	वह लोग जिन्हों ने	तरफ़	और उस का रसूल (स)	अल्लाह	से	एलान-ए-बरात

فَسِيْحُوْا فِى الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۙ

अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले	नहीं	कि तुम	और जान लो	महीने	चार	ज़मीन में	पस चल फिर लो

وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢﴾ وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى

तरफ़ (लिए)	और उस का रसूल	अल्लाह से	और एलान	2	काफ़िर (जमा)	रुस्वा करने वाला	और यह कि अल्लाह

النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِىْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ

मुश्रिक (जमा)	से	क़तअ़ तअ़ल्लुक़	कि अल्लाह	हज-ए-अक्बर	दिन	लोग

وَرَسُوْلُهٗ ۭ فَاِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ

कि तुम	तो जान लो	तुम ने मुँह फेर लिया	और अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	तो यह	तुम तौबा करो	पस अगर	और उस का रसूल

غَيْرُ مُعْجِزِى اللّٰهِ ۭ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۙ ﴿٣﴾ اِلَّا

सिवाए	3	दर्दनाक	अ़ज़ाब से	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	और ख़ुशख़बरी दो (आगाह कर दो)	अल्लाह	आ़जिज़ करने वाले	न

الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْـًٔا وَّلَمْ

और न	कुछ भी	उन्हों ने तुम से कमी न की	फिर	मुश्रिक (जमा)	से	तुम ने अ़हद किया था	वह लोग जो

يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ

उन की मुद्दत	तक	उन का अ़हद	उन से	तो पूरा करो	किसी की	तुम्हारे ख़िलाफ़	उन्हों ने मदद की

اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٤﴾ فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا

तो क़त्ल करो	हुर्मत वाले	महीने	गुज़र जाएं	फिर जब	4	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह

الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ

और उन्हें घेर लो	और उन्हें पकड़ो	तुम उन्हें पाओ	जहां	मुश्रिक (जमा)

وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	और क़ाइम करें	वह तौबा कर लें	फिर अगर	हर घात	उन के लिए	और बैठो

وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۭ ﴿٥﴾ وَاِنْ

और अगर	5	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन का रास्ता	तो छोड़ दो	और ज़कात अदा करें

اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ

अल्लाह का कलाम	वह सुन ले	यहां तक कि	तो उसे पनाह दे दो	आप से पनाह मांगे	मुश्रिकीन	से	कोई

ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾ ع ١ ٦ ٧

6	इल्म नहीं रखते	लोग	इस लिए कि वह	यह	उस की अम्न की जगह	उसे पहुँचा दें	फिर

अल्लाह और उस के रसूल (स) (की तरफ़) से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ है उन मुश्रिकों से जिन्हों ने तुम से अ़हद किया हुआ था। (1)

पस (मुश्रिको) ज़मीन में चार महीने चल फिर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं, और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रुस्वा करने वाला है। (2)

और अल्लाह और उस के रसूल (की तरफ़) से हज-ए-अक्बर के दिन लोगों के लिए एलान है कि अल्लाह और उस के रसूल का मुश्रिकों से क़तअ़ तअ़ल्लुक़ है, पस अगर तुम तौबा कर लो तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और अगर तुम ने मुँह फेर लिया तो जान लो कि तुम अल्लाह को आ़जिज़ करने वाले नहीं, और आगाह कर दो उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया अ़ज़ाब दर्दनाक से। (3)

सिवाए उन मुश्रिक लोगों के जिन से तुम ने अ़हद किया था, फिर उन्हों ने तुम से (अ़हद में) कुछ भी कमी न की और न उन्हों ने तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की, तो उन से उन का अ़हद उन की (मुक़र्ररा) मुद्दत तक पूरा करो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (4)

फिर जब हुर्मत वाले महीने गुज़र जाएं तो मुश्रिकों को क़त्ल करो जहां तुम उन्हें पाओ, और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेर लो, और उन के लिए हर घात में बैठो, फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें तो उन का रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला निहायत मेहरबान है। (5)

और अगर मुश्रिकीन हि से कोई आप (स) से पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दें यहां तक कि वह सुन ले अल्लाह का कलाम, फिर उसे उस की अम्न की जगह पहुँचा दें, यह इस लिए है कि वह इल्म नहीं रखते (नादान हैं)। (6)

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ

और उस के रसूल के पास	अल्लाह के पास	अ़हद	मुश्रिकों के लिए	हो	क्यों कर

اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا

वह क़ाइम रहें	सो जब तक	मस्जिदे हराम	पास	तुम ने अ़हद किया	वह लोग जो	सिवाए

لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧ كَيْفَ وَاِنْ

और अगर	कैसे	7	परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	उन के लिए	तो तुम क़ाइम रहो	तुम्हारे लिए

يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ۭ يُرْضُوْنَكُمْ

वह तुम्हें राज़ी कर देते हैं	और न अ़हद	क़राबत	तुम्हारी	न लिहाज़ करें	तुम पर	वह ग़ालिब आजाएं

بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٨ ۚ

8	नाफ़रमान	और उन के अक्सर	उन के दिल	लेकिन नहीं मानते	अपने मुहँ (जमा) से

اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ

उस का रास्ता	से	फिर उन्हों ने रोका	थोड़ी	क़ीमत	अल्लाह की आयात से	उन्हों ने ख़रीद ली

اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٩ لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا

क़राबत	किसी मोमिन	(बारे) में	लिहाज़ नहीं करते	9	वह करते हैं	जो	बुरा	बेशक वह

وَّلَا ذِمَّةً ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝١٠ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا

और क़ाइम करें	तौबा कर लें	फिर अगर वह	10	हद से बढ़ने वाले	वह	और वही लोग	अ़हद	और न

الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ۭ وَنُفَصِّلُ

और खोल कर बयान करते हैं	दीन	में	तो तुम्हारे भाई	और अदा करें ज़कात	नमाज़

الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝١١ وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ

अपनी क़स्में	वह तोड़ दें	और अगर	11	इल्म रखते हैं	लोगों के लिए	आयात

مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا

तो जंग करो	तुम्हारा दीन	में	और ऐब निकालें	अपना अ़हद	के बाद से

اَىِٕمَّةَ الْكُفْرِ ۙ اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ

शायद वह	उन की	नहीं क़स्म	बेशक वह	कुफ़्र के सरदार

يَنْتَهُوْنَ ۝١٢ اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ

अपना अ़हद	उन्हों ने तोड़ डाला	ऐसी क़ौम	क्या तुम न लड़ोगे?	12	बाज़ आजाएं

وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۭ

पहली बार	तुम से पहल की	और वह	रसूल (स)	निकालने का	और इरादा किया

اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٣

13	ईमान वाले	अगर तुम हो	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	तो अल्लाह	क्या तुम उन से डरते हो?

क्यों कर हो मुश्रिकों के लिए अल्लाह के पास और उस के रसूल (स) के पास कोई अ़हद सिवाए उन लोगों के जिन से तुम ने अ़हद किया मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) के पास, सो जब तक वह तुम्हारे लिए (अ़हद पर) क़ाइम रहें तुम (भी) उन के लिए क़ाइम रहो, बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (7)

कैसे (सुलह हो जब हाल यह है कि) अगर वह तुम पर ग़ालिब आजाएं तो न लिहाज़ करें तुम्हारी क़राबत का और न अ़हद का, वह तुम्हें अपने मुहँ से (महेज़ ज़बानी) राज़ी कर देते हैं, लेकिन उन के दिल नहीं मानते, और उन में अक्सर नाफ़रमान हैं। (8)

उन्हों ने अल्लाह की आयात से थोड़ी क़ीमत ख़रीद ली, फिर उन्हों ने उस के रास्ते से रोका, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (9)

वह किसी मोमिन के बारे में न क़राबत का लिहाज़ करते हैं न अ़हद का, और वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (10)

फिर अगर वह तौबा कर लें और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें तो तुम्हारे भाई हैं दीन में, और हम आयात खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। (11)

और अगर वह अपनी क़स्में तोड़ दें अपने अ़हद के बाद और तुम्हारे दीन में ऐब निकालें, तो कुफ़्र के सरदारों से जंग करो, बेशक उन की क़स्में कुछ नहीं, शायद वह (ताक़त के ज़ोर ही से) बाज़ आजाएं। (12)

क्या तुम ऐसी क़ौम से न लड़ोगे? जिन्हों ने अपना अ़हद तोड़ डाला और उन्हों ने रसूल (स) को निकालने (जिला वतन करने) का इरादा किया और उन्हों ने तुम से पहल की, क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह ज़ियादा हक़ रखता है कि तुम उस से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। (13)

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ

उन पर	और तुम्हें ग़ालिब करे	और उन्हें रुस्वा करे	तुम्हारे हाथों से	उन्हें अ़ज़ाब दे अल्लाह	तुम उन से लड़ो

وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٤﴾ وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ۭ

उन के दिल (जमा)	गुस्सा	और दूर कर दे	14	मोमिनीन	लोग	सीने (दिल)	और शिफ़ा बख़्शे (ठन्डे करे)

وَيَتُوْبُ اللّٰهُ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿١٥﴾ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ

कि	क्या तुम समझते हो	15	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह	जिसे चाहे	पर	और अल्लाह तौबा क़ुबूल करता है

تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا

और उन्हों ने नहीं बनाया	तुम में से	उन्हों ने जिहाद किया	वह लोग जो	मालूम किया अल्लाह	और अभी नहीं	तुम छोड़ दिए जाओगे

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ

बाख़बर	और अल्लाह	राज़दार	और न मोमिनीन	और न उस का रसूल (स)	अल्लाह	सिवा

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٦﴾ مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰهِ ع ٢/١٠ ٨

अल्लाह की मस्जिदें	वह आबाद करें	कि	मुश्‍रिकों के लिए	नहीं है	16	उस से जो तुम करते हो

شٰهِدِيْنَ عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ښ

उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	कुफ़्र को	अपनी जानें (अपने ऊपर)	पर	तसलीम करते हों

وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ईमान लाया	जो	अल्लाह की मस्जिदें	वह आबाद करता है	सिर्फ़	17	हमेशा रहेंगे	वह	और जहन्नम में

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ قف

अल्लाह	सिवाए	और वह न डरा	और ज़कात अदा की	और उस ने नमाज़ क़ाइम की	और आख़िरत का दिन

فَعَسٰٓى اُولٰۗىِٕكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ﴿١٨﴾ اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ

पानी पिलाना	क्या तुम ने बनाया (ठहराया)	18	हिदायत पाने वाले	से	हों	कि	वही लोग	सो उम्मीद है

الْحَاۗجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान लाया	उस के मानिंद	मस्जिदे हराम	और आबाद करना	हाजी (जमा)

وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ لَا يَسْتَوٗنَ عِنْدَ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह के नज़दीक	वह बराबर नहीं	अल्लाह की राह	में	और उस ने जिहाद किया

وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٩﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وقف لازم

ईमान लाए	जो लोग	19	ज़ालिम (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह

وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ

और अपनी जानें	अपने मालों से	अल्लाह का रास्ता	में	और जिहाद किया	और उन्हों ने हिज्रत की

اَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	मुराद को पहुँचने वाले	वह	और वही लोग	अल्लाह के हां	दरजे	बहुत बड़े

तुम उन से लड़ो (ताकि) अल्लाह उन्हें अ़ज़ाब दे तुम्हारे हाथों से और उन्हें रुस्वा करे और तुम्हें उन पर ग़ालिब करे, और दिल ठन्डे करे मोमिन लोगों के, (14)

और उन के दिलों से गुस्सा दूर करे, और अल्लाह जिस की चाहे तौबा क़ुबूल करता है, और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है। (15)

क्या तुम गुमान करते हो कि तुम छोड़ दिए जाओगे? (जबकि) अल्लाह ने अभी उन को मालूम नहीं किया तुम में से जिन्हों ने जिहाद किया, और उन्हों ने नहीं बनाया अल्लाह के सिवा और उस के रसूल (स) और मोमिनों (के सिवा) राज़दार। और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (16)

मुश्‍रिकों का (काम) नहीं कि वह आबाद करें अल्लाह की मस्जिदें (जबकि) अपने ऊपर कुफ़्र को तसलीम करते हों, वही लोग हैं जिन के अ़मल अकारत गए, और वह हमेशा जहन्नम में रहेंगे। (17)

अल्लाह की मस्जिदें सिर्फ़ वही आबाद करता है जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया, और उस ने नमाज़ क़ाइम की और ज़कात अदा की और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा, सो उम्मीद है कि वही लोग हिदायत पाने वालों में से हों। (18)

क्या तुम ने हाजियों को पानी पिलाना और मस्जिद हराम (ख़ाना कअ़बा) की मुजावरी करने को ठहराया है उस के मानिंद जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान लाया और उस ने अल्लाह की राह में जिहाद किया, वह बराबर नहीं हैं अल्लाह के नज़दीक, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (19)

जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने हिज्रत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया (उन के) दरजे अल्लाह के हां बहुत बड़े हैं, और वही लोग मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20)

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا

उन में	उन के लिए	और बाग़ात	और ख़ुशनूदी	अपनी तरफ़ से	रहमत की	उन का रब	उन्हें ख़ुशख़बरी देता है

نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ﴿٢١﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ

उस के हां	बेशक अल्लाह	हमेशा	उस में	हमेशा रहेंगे	21	दाइमी	नेमत

اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ

अपने बाप दादा	तुम न बनाओ	वह लोग जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	22	अज़ीम	अजर

وَاِخْوَانَكُمْ اَوْلِيَآءَ اِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ وَمَنْ

और जो	ईमान पर (ईमान के मुक़ाबिल)	कुफ़्र	अगर वह पसन्द करें	रफ़ीक़	और अपने भाई

يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ اِنْ كَانَ

हों	अगर	कहे दें	23	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	तुम में से	दोस्ती करेगा उन से

اٰبَآؤُكُمْ وَاَبْنَآؤُكُمْ وَاِخْوَانُكُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ

और तुम्हारे कुंबे	और तुम्हारी बीवियां	और तुम्हारे भाई	और तुम्हारे बेटे	तुम्हारे बाप दादा

وَاَمْوَالُ ِۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا

उस का नुक़्सान	तुम डरते हो	और तिजारत	जो तुम ने कमाए	और माल

وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ اَحَبَّ اِلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल	अल्लाह से	तुम्हारे लिए (तुम्हें)	ज़ियादा प्यारे	जो तुम पसन्द करते हो	और घर

وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ بِاَمْرِهٖ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	उस का हुक्म	ले आए अल्लाह	यहां तक कि	इन्तिज़ार करो	उस की राह में	और जिहाद

ع ٣ ٨ ٩ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٢٤﴾ لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ فِيْ

में	अल्लाह ने तुम्हारी मदद की	अलबत्ता	24	नाफ़रमान	लोग	हिदायत नहीं देता

مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ ۙ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ اِذْ اَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ

अपनी कस्रत	तुम ख़ुश हुए (इतरा गए)	जब	और हुनैन के दिन	बहुत से	मैदान (जमा)

فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ

फ़राख़ी के बावजूद	ज़मीन	तुम पर	और तंग हो गई	कुछ	तुम्हें	तो न फ़ाइदा दिया

ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

अपनी तस्कीन	अल्लाह ने नाज़िल की	फिर	25	पीठ दे कर	तुम फिर गए	फिर

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ۚ

वह तुम ने न देखे	लशकर	और उतारे उस ने	मोमिनीन	और पर	अपने रसूल (स)	पर

وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٦﴾

26	काफ़िर (जमा)	सज़ा	और यही	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और अज़ाब दिया

उन का रब उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत और ख़ुशनूदी और बाग़ात की ख़ुशख़बरी देता है, उन में उन के लिए दाइमी नेमत है। (21)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, बेशक अल्लाह के (हां) अजरे अ़ज़ीम है। (22)

ऐ ईमान वालो! अपने बाप दादा को और अपने भाइयों को रफ़ीक़ न बनाओ अगर वह लोग ईमान के ख़िलाफ़ कुफ़्र को पसन्द करें, और तुम में से जो उन से दोस्ती करेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (23)

कह दें, अगर तुम्हारे बाप दादा, तुम्हारे बेटे, और तुम्हारे भाई, और तुम्हारी बीवियां, और तुम्हारे कुंबे, और माल जो तुम ने कमाए, और तिजारत जिस के नुक़्सान से तुम डरते हो, और घर जिन को तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह से और उस के रसूल से और उस की राह में जिहाद से ज़ियादा प्यारे हों तो इन्तिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आजाए, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (24)

अलबत्ता अल्लाह ने तुम्हारी मदद की बहुत से मैदानों में, और हुनैन के दिन, जब तुम अपनी कस्रत पर इतरागए तो उस (कस्रत) ने तुम्हें कुछ फ़ाइदा न दिया, और तुम पर ज़मीन फ़राख़ी के बावजूद तंग हो गई, फिर तुम पीठ दे कर फिरगए। (25)

फिर अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तस्कीन नाज़िल की, और उस ने लशकर उतारे जो तुम ने न देखे और काफ़िरों को अ़ज़ाब दिया, और यही सज़ा है काफ़िरों की। (26)

ثُمَّ يَتُوبُ اللّٰهُ مِنۢ بَعۡدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنۡ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	जिस की चाहे	पर	इस	बाद	तौबा क़ुबूल करेगा अल्लाह	फिर

غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٢٧﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنَّمَا الۡمُشۡرِكُوۡنَ

मुश्रिक (जमा)	इस के सिवा नहीं	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	27	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला

نَجَسٌ فَلَا يَقۡرَبُوا الۡمَسۡجِدَ الۡحَرَامَ بَعۡدَ عَامِهِمۡ هٰذَا ۚ

इस	साल	बाद	मस्जिदे हराम	लिहाज़ा वह क़रीब न जाएं	पलीद

وَاِنۡ خِفۡتُمۡ عَيۡلَةً فَسَوۡفَ يُغۡنِيۡكُمُ اللّٰهُ مِنۡ فَضۡلِهٖۤ اِنۡ شَآءَ ؕ

अगर वह चाहे	अपना फ़ज़्ल	से	तुम्हें ग़नी कर देगा अल्लाह	तो जल्द	मोहताजी	तुम्हें डर हो	और अगर

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ ﴿٢٨﴾ قَاتِلُوا الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ईमान नहीं लाए	वह लोग जो	तुम लड़ो	28	हिक्मत वाला	जानने वाला	बेशक अल्लाह

وَلَا بِالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوۡنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ

जो हराम ठहराया अल्लाह ने	और न हराम जानते हैं	यौमे आख़िरत पर	और न

وَرَسُوۡلُهٗ وَلَا يَدِيۡنُوۡنَ دِيۡنَ الۡحَقِّ مِنَ الَّذِيۡنَ

वह लोग जो	से	दीने हक़	और न क़ुबूल करते हैं	और उस का रसूल (स)

اُوۡتُوا الۡكِتٰبَ حَتّٰى يُعۡطُوا الۡجِزۡيَةَ عَنۡ يَّدٍ وَّهُمۡ

और वह	हाथ	से	जिज़या	दें	यहां तक	किताब दिए गए (अहले किताब)

ع ٤ ٥ ١٠

صٰغِرُوۡنَ ﴿٢٩﴾ ع وَقَالَتِ الۡيَهُوۡدُ عُزَيۡرُ ۨ ابۡنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ

और कहा	अल्लाह का बेटा	ऊज़ैर	यहूद	और कहा	29	ज़लील हो कर

النَّصٰرَى الۡمَسِيۡحُ ابۡنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوۡلُهُمۡ بِاَفۡوَاهِهِمۡ ۚ

उन के मुँह की	उन की बातें	यह	अल्लाह का बेटा	मसीह (अ)	नसारा

يُضَاهِـُٔوۡنَ قَوۡلَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡ قَبۡلُ ؕ

पहले	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बात	वह रीस करते हैं

قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤۡفَكُوۡنَ ﴿٣٠﴾ اِتَّخَذُوۡۤا اَحۡبَارَهُمۡ

अपने एहबार (उल्मा)	उन्हों ने बना लिया	30	बहके जाते हैं	कहां	हलाक करे उन्हें अल्लाह

وَرُهۡبَانَهُمۡ اَرۡبَابًا مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ وَالۡمَسِيۡحَ

और मसीह (अ)	अल्लाह के सिवा	से	रब (जमा)	और अपने राहेब (दर्वेश)

ابۡنَ مَرۡيَمَ ۚ وَمَاۤ اُمِرُوۡۤا اِلَّا لِيَعۡبُدُوۡۤا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ

माबूदे वाहिद	यह कि वह इबादत करें	मगर	उन्हें हुक्म दिया गया	और नहीं	इब्ने मरयम

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبۡحٰنَهٗ عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿٣١﴾

31	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	वह पाक है	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद

फिर उस के बाद अल्लाह जिस की चाहे तौबा क़ुबूल करेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (27)

ऐ मोमिनों! इस के सिवा नहीं कि मुश्रिक पलीद हैं, लिहाज़ा वह क़रीब न जाएं उस साल के बाद मस्जिदे हराम (ख़ाने कअ़बा) के। और अगर तुम्हें मोहताजी का डर हो तो अल्लाह तुम्हें जल्द ग़नी कर देगा अपने फ़ज़्ल से अगर चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (28)

तुम उन लोगों से लड़ो जो ईमान नहीं लाए अल्लाह पर और न यौमे आख़िरत पर, और न हराम जानते हैं वह जो अल्लाह और उस के रसूल (स) ने हराम ठहराया है, और न दीने हक़ को क़ुबूल करते हैं उन लोगों में से जो अहले किताब हैं, यहां तक कि वह जिज़या दें अपने हाथ से ज़लील हो कर। (29)

यहूद ने कहा ऊज़ैर (अ) अल्लाह का बेटा है और कहा नसारा ने मसीह (अ) अल्लाह का बेटा है, यह बातें है उन के मुँह की, वह रीस करते हैं पहले काफ़िरों की बात की। अल्लाह उन्हें हलाक करे, कहां बहके जा रहे हैं? (30)

उन्हों ने बना लिया अपने उल्मा और अपने दर्वेशों को रब अल्लाह के सिवा, और मसीह (अ) इब्ने मरयम को (भी), और उन्हें हुक्म नहीं दिया गया मगर यह कि वह माबूदे वाहिद की इबादत करें, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (31)

يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَيَاْبَى اللّٰهُ

और न मानेगा अल्लाह	अपने मुँह से (जमा)	अल्लाह का नूर	वह बुझा दें	कि	वह चाहते हैं

اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٣٢﴾ هُوَ

वह	32	काफ़िर (जमा)	पसन्द न करें	ख़ाह	अपना नूर	पूरा करे	यह कि	मगर

الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ

ताकि उसे ग़ल्बा दे	और दीने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल	भेजा	वह जिस ने

النّصف

عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ

वह लोग जो	ऐ	33	मुशरिक (जमा)	पसन्द न करें	ख़ाह	तमाम पर	दीन	पर

اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ

खाते हैं	और राहेब (दर्वेश)	उल्मा	से	बहुत	बेशक	ईमान लाए

اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह का रास्ता	से	और रोकते हैं	नाहक़ तौर पर	लोग (जमा)	माल (जमा)

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ

में	और वह उसे ख़र्च नहीं करते	और चाँदी	सोना	जमा कर के रखते हैं	और वह लोग जो

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣٤﴾ ۙ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا

उस पर	दहकाएंगे	जिस दिन	34	दर्दनाक	अ़ज़ाब	सो उन्हें ख़ुशख़बरी दो	अल्लाह की राह

فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ

और उन की पीठ (जमा)	और उनके पहलू (जमा)	उन की पेशानी	उस से	फिर दाग़ा जाएगा	जहन्नम की आग	में

هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	जो तुम जमा कर के रखते थे	जो	पस मज़ा चखो	अपने लिए	तुम ने जमा कर के रखा	जो	यह है

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِيْ

में	महीने	बारह (12)	अल्लाह के नज़दीक	महीनें	तादाद	बेशक

كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَآ

उन से (उन में)	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	जिस दिन	अल्लाह का हुक्म

اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا

फिर न ज़ुल्म करो	सीधा (दुरुस्त) दीन	यह	हुर्मत वाले	चार (4)

فِيْهِنَّ اَنْفُسَكُمْ ۚ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِيْنَ كَآفَّةً كَمَا

जैसे	सब के सब	मुश्रिकों	और लड़ो	अपने ऊपर	उन में

يُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٦﴾

36	परहेज़गार (जमा)	साथ	कि अल्लाह	और जान लो	सब के सब	वह तुम से लड़ते हैं

वह चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुँह (की फूंकों) से बुझा दें और अल्लाह न मानेगा मगर यह कि अपने नूर को पूरा करे, ख़ाह काफ़िर पसन्द न करें। (32)

वह जिस ने अपना रसूल (स) भेजा हिदायत के साथ और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ल्बा दे, ख़ाह मुश्रिक पसन्द न करें। (33)

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनों)! बेशक बहुत से उल्मा और दर्वेश लोगों के माल नाहक़ तौर पर खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और वह लोग जो सोना चाँदी जमा कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, सो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दो (आगाह कर दो)। (34)

जिस दिन हम उसे दहकाएंगे जहन्नम की आग में, फिर उस से उन की पेशानियाँ और उन के पहलूओं और उन की पीठों को दाग़ा जाएगा कि यह है वह जो तुम ने अपने लिए जमा कर के रखा था, पस मज़ा चखो जो तुम जमा कर के रखते थे। (35)

बेशक महिनों की तादाद अल्लाह के नज़दीक अल्लाह की किताब में बारह महीने हैं जब से उस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, उन में चार हुर्मत वाले (अदब के) महीने हैं, यही है दुरुस्त दीन, पस तुम उन में अपने ऊपर ज़ुल्म न करो, और तुम सब के सब मुश्रिकों से लड़ो जैसे वह सब के सब तुम से लड़ते हैं, और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (36)

यह जो महीने का हटा कर (आगे पीछे करना) कुफ़्र में इज़ाफ़ा है, इस से काफ़िर गुमराह होते हैं, वह उसे (उस महीने को) एक साल हलाल कर लेते हैं और दूसरे साल उसे हराम कर लेते हैं ताकि वह गिनती पूरी कर ले उस की जो अल्लाह ने हराम किए। सो वह हलाल करते हैं जो अल्लाह ने हराम किया है, उन के बुरे अ़मल उन्हें मुज़ैयन कर दिए गए हैं और अल्लाह काफ़िरों की क़ौम को हिदायत नहीं देता। (37)

ऐ मोमिनों! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम्हें कहा जाता है कि अल्लाह की राह में कूच करो तो तुम गिरे जाते हो ज़मीन पर, क्या तुम ने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? सो (कुछ भी) नहीं है दुनिया की ज़िन्दगी का सामान आख़िरत के मुक़ाबले में मगर थोड़ा। (38)

अगर तुम (राहे ख़ुदा) में न निकलोगे तो (अल्लाह) तुम्हें अ़ज़ाब देगा दर्दनाक, और तुम्हारे सिवा कोई और क़ौम बदले में ले आएगा, और तुम उस का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (39)

अगर तुम उस (नबी पाक (स) की मदद न करोगे तो अलबत्ता अल्लाह ने मदद की है जब काफ़िरों ने उन्हें निकाला था, वह दूसरे थे दोनों में, जब वह दोनों ग़ारे (सूर) में थे, जब वह अपने साथी (अबू बक्र सिद्दीक़) से कहते थे, घबराओ नहीं, यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है, तो उस ने उन पर तस्कीन नाज़िल की और ऐसे लशकरों से उन की मदद की जो तुम ने नहीं देखे और काफ़िरों की बात पस्त कर दी, और अल्लाह का कलिमा (बोल) बाला है, और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (40)

तुम निकलो हलके हो या भारी, और अपने मालों से जिहाद करो और अपनी जानों से अल्लाह की राह में, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (41)

اِنَّمَا النَّسِیۡٓءُ زِیَادَةٌ فِی الۡکُفۡرِ یُضَلُّ بِهِ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا							
वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	इस से	गुमराह होते हैं	कुफ़्र में	इज़ाफ़ा	महीने का हटा देना	यह जो	
یُحِلُّوۡنَهٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوۡنَهٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوۡا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ							
हराम किया	जो	गिनती	ताकि वह पूरी कर लें	एक साल	और उस को हराम कर लेते हैं	एक साल	वह उस को हलाल करते हैं
اللّٰهُ فَیُحِلُّوۡا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُیِّنَ لَهُمۡ سُوۡٓءُ اَعۡمَالِهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ							
और अल्लाह	उन के आमाल	बुरे	उन्हें	मुज़ैयन करदिए गए	अल्लाह ने हराम किया	जो	तो वह हलाल करते हैं	अल्लाह
لَا یَهۡدِی الۡقَوۡمَ الۡکٰفِرِیۡنَ ﴿۳۷﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مَا لَکُمۡ							
तुम्हें किया हुआ	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	37	काफ़िर (जमा)	क़ौम	हिदायत नहीं देता	
اِذَا قِیۡلَ لَکُمُ انۡفِرُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ اثَّاقَلۡتُمۡ اِلَی الۡاَرۡضِ ؕ							
ज़मीन	तरफ़ (पर)	तुम गिरे जाते हो	अल्लाह की राह	में	कूच करो	तुम्हें	कहा जाता है	जब
اَرَضِیۡتُمۡ بِالۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا مِنَ الۡاٰخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الۡحَیٰوةِ الدُّنۡیَا								
दुनिया	ज़िन्दगी	सामान	सो नहीं	आख़िरत	से (मुक़ाबला)	दुनिया	ज़िन्दगी को	क्या तुम ने पसन्द कर लिया
فِی الۡاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِیۡلٌ ﴿۳۸﴾ اِلَّا تَنۡفِرُوۡا یُعَذِّبۡکُمۡ عَذَابًا اَلِیۡمًا ۙ								
दर्दनाक	अ़ज़ाब	तुम्हें अ़ज़ाब देगा	अगर न निकलोगे	38	थोड़ा	मगर	आख़िरत	में
وَّیَسۡتَبۡدِلۡ قَوۡمًا غَیۡرَکُمۡ وَلَا تَضُرُّوۡهُ شَیۡـًٔا ؕ وَاللّٰهُ عَلٰی							
पर	और अल्लाह	कुछ भी	और न बिगाड़ सकोगे उस का	तुम्हारे सिवा	और क़ौम	और बदले में ले आएगा	
کُلِّ شَیۡءٍ قَدِیۡرٌ ﴿۳۹﴾ اِلَّا تَنۡصُرُوۡهُ فَقَدۡ نَصَرَهُ اللّٰهُ اِذۡ اَخۡرَجَهُ							
उस को निकाला	जब	तो अलबत्ता अल्लाह ने उस की मदद की है	अगर तुम मदद न करोगे उस की	39	क़ुदरत रखने वाला	हर चीज़	
الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا ثَانِیَ اثۡنَیۡنِ اِذۡ هُمَا فِی الۡغَارِ اِذۡ یَقُوۡلُ							
वह कहते थे	जब	ग़ार	में	जब वह दोनों	दो में	दूसरा	जो काफ़िर हुए (काफ़िर)	वह लोग
لِصَاحِبِهٖ لَا تَحۡزَنۡ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَاَنۡزَلَ اللّٰهُ سَکِیۡنَتَهٗ						
अपनी तस्कीन	तो अल्लाह ने नाज़िल की	हमारे साथ	यक़ीनन अल्लाह	घबराओ नहीं	अपने साथी से
عَلَیۡهِ وَاَیَّدَهٗ بِجُنُوۡدٍ لَّمۡ تَرَوۡهَا وَجَعَلَ کَلِمَةَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوا							
उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	बात	और कर दी	जो तुम ने नहीं देखे	ऐसे लशकरों से	और उस की मदद की	उस पर
السُّفۡلٰی ؕ وَکَلِمَةُ اللّٰهِ هِیَ الۡعُلۡیَا ؕ وَاللّٰهُ عَزِیۡزٌ حَکِیۡمٌ ﴿۴۰﴾							
40	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और अल्लाह	बाला	वह	और अल्लाह का कलिमा (बोल)	पस्त (नीची)
اِنۡفِرُوۡا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوۡا بِاَمۡوَالِکُمۡ وَاَنۡفُسِکُمۡ						
और अपनी जानों	अपने मालों से	और जिहाद करो	और भारी	हलका-हलके	तुम निकलो
فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِکُمۡ خَیۡرٌ لَّکُمۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۴۱﴾							
41	जानते हो	तुम हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह तुम्हारे लिए	अल्लाह की राह	में

ع ٥ ٨ ١١

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ

तो आप (स) के पीछे हो लेते	आसान	और सफ़र	क़रीब	माल (ग़नीमत)	होता	अगर

وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह की	और अब क़समें खाएंगे	रास्ता	उन पर	दूर नज़र आया	और लेकिन

لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ

अपने आप	वह हलाक कर रहे हैं	तुम्हारे साथ	हम ज़रूर निकलते	अगर हम से हो सकता

٦ ع ٥ ١٢ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٤٢﴾ عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ

क्यों	तुम्हें	माफ़ करे अल्लाह	42	यक़ीनन झूटे हैं	कि वह	जानता है	और अल्लाह

اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ

और आप जान लेते	सच्चे	वह लोग जो	आप पर	ज़ाहिर हो जाए	यहां तक कि	उन्हें	तुम ने इजाज़त दी

الْكٰذِبِيْنَ ﴿٤٣﴾ لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	जो ईमान रखते हैं	वह लोग	नहीं मांगते आप से रुख़सत	43	झूटे

وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ

और अपनी जान (जमा)	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और यौमे आख़िरत पर

وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٤﴾ اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	आप से रुख़सत मांगते हैं	वही सिर्फ़	44	मुत्तक़ियों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ

उन के दिल	और शक में पड़े हैं	और यौमे आख़िरत	अल्लाह पर	ईमान नहीं रखते

فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ

निकलने का	वह इरादा करते	और अगर	45	भटक रहे हैं	अपने शक	में	सो वह

لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ

उन का उठना	अल्लाह ने नापसन्द किया	और लेकिन	कुछ सामान	उस के लिए	ज़रूर तैयार करते

فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ﴿٤٦﴾

46	बैठने वाले	साथ	बैठ जाओ	और कहा गया	सो उन को रोक दिया

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا

ख़राबी	मगर (सिवाए)	तुम्हें बढ़ाते	न	तुम में	वह निकलते	अगर

وَّلَاْ اَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ

बिगाड़	तुम्हारे लिए चाहते हैं	तुम्हारे दरमियान	और दौड़े फिरते

وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٧﴾

47	ज़ालिमों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	उन के	सुनने वाले	और तुम में

अगर माले ग़नीमत क़रीब और सफ़र आसान होता तो वह आप (स) के पीछे हो लेते, लेकिन दूर नज़र आया उन्हें रास्ता, और अब अल्लाह की क़समें खाएंगे कि अगर हम से हो सकता तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते, वह अपने आप को हलाक कर रहें हैं, और अल्लाह जानता है कि वह यक़ीनन झूटे हैं। (42)

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, आप (स) ने (उस से पेशतर) उन्हें क्यों इजाज़त दे दी, यहां तक कि आप पर ज़ाहिर हो जाते वह लोग जो सच्चे हैं और आप (स) जान लेते झूटों को। (43)

आप (स) से वह लोग रुख़सत नहीं मांगते जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान रखते हैं कि वह जिहाद करें अपने मालों से अपनी जानों से, और अल्लाह मुत्तक़ियों (डरने वाले, परहेज़गारों) को ख़ूब जानता है। (44)

आप (स) से सिर्फ़ वह लोग रुख़सत मांगते हैं जो अल्लाह पर और यौमे आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और उन के दिल शक में पड़े हैं, सो वह अपने शक में भटक रहे हैं। (45)

और अगर वह निकलने का इरादा करते तो उस के लिए ज़रूर तैयार करते कुछ सामान, लेकिन अल्लाह ने उन का उठना नापसन्द किया, सो उन को रोक दिया और कह दिया गया (माज़ूर) बैठने वालों के साथ बैठ जाओ। (46)

और अगर वह तुम में (तुम्हारे साथ) निकलते तो तुम्हारे लिए ख़राबी के सिवा कुछ न बढ़ाते, और तुम्हारे दरमियान दौड़े फिरते, चाहते हुए तुम्हारे लिए बिगाड़, और तुम में उन की बातें सुनने वाले मौजोद हैं, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (47)

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْاُمُوْرَ

तद्बीरें	तुम्हारे लिए	उन्हों ने उलट पलट कीं	इस से क़ब्ल	बिगाड़	अलबत्ता चाहा था उन्हों ने

حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	पसन्द न करने वाले	और वह	अम्रे इलाही	और ग़ालिब आगया	हक़	आगया	यहां तक कि

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ؕ اَلَا فِي

में	याद रखो	और न डाले मुझे आज़माइश में	मुझे	इजाज़त दें	कहता है	जो कोई	और उन में से

الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾

49	काफ़िरों को	घेरे हुए	जहन्नम	और बेशक	वह पड़ चुके हैं	आज़माइश

اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ

कोई मुसीबत	तुम्हें पहुँचे	और अगर	उन्हें बुरी लगे	कोई भलाई	तुम्हें पहुँचे	अगर

يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَاۤ اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ

और वह	और वह लौट जाते हैं	इस से पहले	अपना काम	हम ने पकड़ लिया (संभाल लिया) था	तो वह कहें

فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾ قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَاۤ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ

हमारे लिए	अल्लाह ने लिख दिया	जो	मगर	हरगिज़ न पहुँचेगा हमें	आप कह दें	50	वह ख़ुशियां मनाते

هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾

51	मोमिन (जमा)	भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	हमारा मौला	वही

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَاۤ اِلَّاۤ اِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ؕ

दो ख़ूबियों	एक का	मगर	हम पर	क्या तुम इन्तिज़ार करते हो	आप (स) कह दें

وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖۤ

उस के पास	से	कोई अ़ज़ाब	अल्लाह	तुम्हें पहुँचे	कि	तुम्हारे लिए	और हम इन्तिज़ार करते हैं

اَوْ بِاَيْدِيْنَا ؕ فَتَرَبَّصُوْۤا اِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	इन्तिज़ार करने वाले	तुम्हारे साथ	हम	सो तुम इन्तिज़ार करो	हमारे हाथों से	या

قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ؕ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ

तुम हो	बेशक तुम	तुम से	हरगिज़ न क़ुबूल किया जाएगा	नाख़ुशी से	या	ख़ुशी से	तुम ख़र्च करो	आप (स) कह दें

قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّاۤ

मगर	उन का ख़र्च	उन से	क़ुबूल किया जाए	कि	उन के लिए रुकावट बना	और न	53	फ़ासिक़ (जमा)	क़ौम

اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ

नमाज़	और वह नहीं आते	और उस के रसूल के	अल्लाह के	मुन्किर हुए	यह कि वह

اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾

54	नाख़ुशी से	और वह	मगर	और वह ख़र्च नहीं करते	सुस्त	और वह	मगर

अलबत्ता उन्हों ने चाहा था इस से क़ब्ल भी बिगाड़, और उन्हों ने तुम्हारे लिए तद्बीरें उलट पलट कीं यहां तक कि हक़ आगया, और ग़ालिब आगया अम्रे इलाही और वह पसन्द न करने वाले (ना ख़ुश) रहे। (48)

और उन में से कोई कहता है मुझे इजाज़त दें और मुझे आज़माइश में न डालें, याद रखो वह आज़माइश में पड़ चुके हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (49)

अगर तुम्हें पहुँचे कोई भलाई तो उन्हें बुरी लगे, और तुम्हें कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहें: हम ने अपना काम पहले ही संभाल लिया था और वह ख़ुशियां मनाते लौट जाते हैं। (50)

आप (स) कह दें हमें हरगिज़ न पहुँचेगा मगर (वही) जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है, वही हमारा मौला है। और मोमिनों को अल्लाह पर ही भरोसा करना चाहिए। (51)

आप (स) कह दें: किया तुम दो ख़ूबियों में से हम पर एक का इन्तिज़ार करते हो, और हम तुम्हारे लिए इन्तिज़ार कर रहे हैं कि तुम्हें पहुँचे अल्लाह के पास से कोई अ़ज़ाब या हमारे हाथों से, सो तुम इन्तिज़ार करो, हम (भी) तुम्हारे साथ मुन्तज़िर हैं। (52)

आप (स) कह दें: तुम ख़ुशी से ख़र्च करो या नाख़ुशी से, हरगिज़ तुम से क़ुबूल न किया जाएगा, बेशक तुम हो क़ौमे-फ़ासिक़ीन (नाफ़रमानों की क़ौम)। (53)

और उन के ख़र्च क़ुबूल न होने की कोई वजह इस के सिवा नहीं कि उन्हों ने अल्लाह और रसूल से कुफ़्र किया है, और वह नमाज़ को नहीं आते मगर सुस्ती से और वह ख़र्च नहीं करते मगर नाख़ुशी से। (54)

فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ

कि अ़ज़ाब दे उन्हें	चाहता है अल्लाह	यही	उन की औलाद	और न	उन के माल	सो तुम्हें तअ़ज्जुब न हो

بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾

55	काफ़िर हों	और वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया की ज़िन्दगी	में	उस से

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ؕ وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ

लोग	और लेकिन वह	तुम में से	वह	हालांकि नहीं	अलबत्ता तुम में से	बेशक वह	अल्लाह की	और क़स्में खाते हैं

يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾ لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا

घुसने की जगह	या	ग़ार (जमा)	या	पनाह की जगह	वह पाएं	अगर	56	डरते हैं

لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ

तअ़न करते हैं आप पर	जो (बाज़)	और उन में से	57	रस्सियां तुड़ाते हैं	और वह	उस की तरफ़	तो वह फिर जाएं

فِى الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ اُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَاِنْ لَّمْ يُعْطَوْا

उन्हें न दिया जाए	और अगर	वह राज़ी हो जाएं	उस से	उन्हें दे दिया जाए	सो अगर	सदक़ात	में

مِنْهَآ اِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾ وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ

अल्लाह	उन्हें दिया	जो	राज़ी हो जाते	अगर वह	क्या अच्छा होता	58	नाराज़ हो जाते हैं	वह	उसी वक़्त	उस से

وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ

अपना फ़ज़्ल	से	अल्लाह	अब हमें देगा	हमें काफ़ी है अल्लाह	और वह कहते	और उस का रसूल

ع ١٧ ١٣ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ اِنَّآ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ

मुफ़लिस (जमा)	ज़कात	सिर्फ़	59	रग़बत रखते हैं	अल्लाह की तरफ़	बेशक हम	और उस का रसूल

وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِى

और में	उन के दिल	और उल्फ़त दी जाए	उस पर	और काम करने वाले	मिस्कीन (जमा) मोहताज

الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ؕ فَرِيْضَةً

फ़रीज़ा (ठहराया हुआ)	और मुसाफ़िर	अल्लाह की राह	और में	तावान भरने वाले, क़र्ज़दार	गर्दनों (के छुड़ाने)

مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾ وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ

ईज़ा देते (सताते) हैं	जो लोग	और उन में से	60	हिक्मत वाला	इल्म वाला	और अल्लाह	अल्लाह	से

النَّبِىَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ اُذُنٌ ؕ قُلْ اُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ

वह ईमान लाते हैं	भलाई तुम्हारे लिए	कान	आप कह दें	कान	वह (यह)	और कहते हैं	नबी

بِاللّٰهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ؕ

तुम में	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	और रहमत	मोमिनों पर	और यक़ीन रखते हैं	अल्लाह पर

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٦١﴾

61	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह का रसूल	सताते हैं	और जो लोग

सो तुम्हें तअ़ज्जुब न हो उन के मालों पर और न उन की औलाद पर, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया की ज़िन्दगी में अ़ज़ाब दे, और उन की जानें निकलें तो (उस वक़्त) भी वह काफ़िर हों। (55)

और वह अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि बेशक वह तुम में से हैं, हालांकि वह तुम में से नहीं, लेकिन वह लोग डरते हैं। (56)

अगर वह पाएं कोई पनाह की जगह, या ग़ार या घुसने (सर समाने) की जगह तो वह उस की तरफ़ फिर जाएं रस्सियां तुड़ाते हुए। (57)

और उन में से बाज़ आप (स) पर सदक़ात (की तक़्सीम में) तअ़न करते हैं, सो अगर उन में से उन्हें दे दिया जाए तो वह राज़ी हो जाएं और अगर उन्हें उस से न दिया जाए तो वह उसी वक़्त नाराज़ हो जाते हैं। (58)

क्या अच्छा होता अगर वह (उस पर) राज़ी हो जाते जो अल्लाह ने और उस के रसूल (स) ने उन्हें दिया, और वह कहते हमें अल्लाह काफ़ी है, अब हमें देगा अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और उस का रसूल, बेशक हम अल्लाह की तरफ़ रग़बत रखते हैं। (59)

ज़कात (हक़ है) सिर्फ़ मुफ़लिसों का, और मोहताजों का, और उस पर काम करने वाले (कारकुनों का), और (उन लोगों का) जिन्हें (इस्लाम की) उल्फ़त दी जाए, और गर्दनों के छुड़ाने (आज़ाद कराने) में और क़र्ज़दारों (का क़र्ज़ अदा करने में), और अल्लाह की राह में, और मुसाफ़िरों का, (यह) अल्लाह की तरफ़ से ठहराया हुआ फ़रीज़ा है, और अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। (60)

और उन में से बाज़ लोग नबी को सताते हैं और कहते हैं यह तो कान है (कानों का कच्चा है), कह दें कि तुम्हारी भलाई के लिए आप (स) ऐसे हैं, वह अल्लाह पर ईमान लाते हैं और मोमिनों पर यक़ीन रखते हैं और उन लोगों के लिए रहमत हैं जो तुम में से ईमान लाए, और जो लोग अल्लाह के रसूल (स) को सताते हैं उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (61)

वह तुम्हारे लिए (तुम्हारे सामने) अल्लाह की क़स्में खाते हैं ताकि तुम्हें ख़ुश करें, और अल्लाह और उस के रसूल (स) का ज़ियादा हक़ है कि वह उन्हें ख़ुश करें अगर वह ईमान वाले हैं। (62)

क्या वह नहीं जानते? कि जो मुक़ाबला करेगा अल्लाह का और उस के रसूल (स) का तो बेशक उस के लिए दोज़ख़ की आग है वह उस में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी रुसवाई है। (63)

मुनाफ़िक़ीन डरते हैं कि मुसलमानों पर कोई ऐसी सूरत नाज़िल (न) हो जाए जो उन्हें (मुसलमानों को) जता दे जो उन (मुनाफ़िक़ों) के दिलों में है, आप (स) कह दें: तुम ठठे (हँसी मज़ाक़) करते रहो, बेशक तुम जिस से डरते हो अल्लाह उसे खोलने वाला है (खोल कर रहेगा)। (64)

और अगर तुम उन से पूछो तो वह ज़रूर कहेंगे: हम तो सिर्फ़ दिल्लगी और खेल करते हैं, आप (स) कह दें क्या तुम अल्लाह से, और उस की आयात से, और उस के रसूल (स) से हँसी करते थे? (65)

बहाने न बनाओ, तुम अपने ईमान लाने के बाद काफ़िर हो गए, और हम तुम में से एक गिरोह को माफ़ कर दें तो दूसरे गिरोह को अ़ज़ाब देंगे, इस लिए कि वह मुजरिम हैं। (66)

मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के हम जिन्स) हैं, बुराई का हुक्म देते हैं और नेकी से रोकते हैं, और अपने हाथ (मुठ्ठियां ख़र्च करने से) बन्द रखते हैं, वह अल्लाह को भूल बैठे तो अल्लाह ने उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफ़िक़ नाफ़रमान हैं। (67)

अल्लाह ने मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और काफ़िरों को जहन्नम की आग का वादा दिया है, उस में हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए काफ़ी है, और उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए हमेशा रहने वाला अ़ज़ाब है। (68)

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ

और उस का रसूल	और अल्लाह	ताकि तुम्हें ख़ुश करें	तुम्हारे लिए	अल्लाह की	वह क़स्में खाते हैं

اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ اِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا الثلثة

क्या वह नहीं जानते	62	वह ईमान वाले हैं	अगर	वह उन को ख़ुश करें	कि	ज़ियादा हक़

اَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ

दोज़ख़ की आग	उस के लिए	तो बेशक	और उस के रसूल	अल्लाह	मुक़ाबला करेगा	जो	कि वह

خَالِدًا فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾ يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ

मुनाफ़िक़ (जमा)	डरते हैं	63	बड़ी	रुसवाई	यह	उस में	हमेशा रहेंगे

اَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ

उन के दिल (जमा)	में	वह जो	उन्हें जता दे	सूरत	उन (मुसलमानों) पर	कि नाज़िल हो

قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَىِٕنْ

और अगर	64	जिस से तुम डरते हो	खोलने वाला	बेशक अल्लाह	ठठे करते रहो	आप कह दें

سَاَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ اَبِاللّٰهِ

क्या अल्लाह के	आप (स) कह दें	और खेल करते	दिल्लगी करते	हम थे	कुछ नहीं (सिर्फ़)	तो वह ज़रूर कहेंगे	तुम उन से पूछो

وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ

तुम काफ़िर हो गए हो	न बनाओ बहाने	65	हँसी करते	तुम थे	और उस के रसूल	और उस की आयात

بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ ۭ اِنْ نَّعْفُ عَنْ طَاۗىِٕفَةٍ مِّنْكُمْ

तुम में से	एक गिरोह	से (को)	हम माफ़ कर दें	अगर	तुम्हारा (अपना) ईमान	बाद

نُعَذِّبْ طَاۗىِٕفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٦٦﴾ ع اَلْمُنٰفِقُوْنَ ع ٧ ١٤

मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)	66	मुजरिम (जमा)	थे	इस लिए कि वह	एक (दूसरा) गिरोह	हम अ़ज़ाब दें

وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وقف لازم

बुराई का	वह हुक्म देते हैं	बाज़ के	से	उन में से बाज़	और मुनाफ़िक़ औरतें

وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ۭ نَسُوا

वह भूल बैठे	अपने हाथ	और बन्द रखते हैं	नेकी	से	और मना करते हैं

اللّٰهَ فَنَسِيَهُمْ ۭ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٦٧﴾ وَعَدَ اللّٰهُ

अल्लाह ने वादा किया	67	नाफ़रमान (जमा)	वह (ही)	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक	तो उस ने उन्हें भुला दिया	अल्लाह

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम की आग	और काफ़िर (जमा)	और मुनाफ़िक़ औरतें	मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)

هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٦٨﴾ ۙ

68	हमेशा रहने वाला	अ़ज़ाब	और उन के लिए	और अल्लाह ने उन पर लानत की	उन के लिए काफ़ी	वही

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّاَكْثَرَ

और ज़ियादा	क़ुव्वत	तुम से	बहुत ज़ोर वाले	वह थे	तुम से क़ब्ल	जिस तरह वह लोग जो

اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۭ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ

सो तुम फ़ाइदा उठा लो	अपने हिस्से से	सो उन्हों ने फ़ाइदा उठाया	और औलाद	माल में

بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ

अपने हिस्से से	तुम से पहले	वह लोग जो	फ़ाइदा उठाया	जैसे	अपने हिस्से से

وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۭ اُولٰۗىِٕكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا

दुनिया में	उन के आमाल	अकारत गए	वही लोग	घुसे	जैसे वह	और तुम घुसे (बुरी बातों में)

وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٩﴾ اَلَمْ يَاْتِهِمْ

क्या इन तक न आई	69	ख़सारा उठाने वाले	वह	और वही लोग	और आख़िरत

نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ڏ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ

और क़ौमे इब्राहीम (अ)	और समूद	और आ़द	क़ौमे नूह	इन से पहले	वह लोग जो	ख़बर

وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۭ اَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ

वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ	उन के रसूल (जमा)	उन के पास आए	और उलटी हुई बस्तियां	और मदयन वाले

فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

अपने ऊपर	वह थे	लेकिन	कि वह उन पर ज़ुल्म करता	अल्लाह	था	सो नहीं

يَظْلِمُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَاۗءُ

रफ़ीक़ (जमा)	उन में से बाज़	और मोमिन औ़रतें	और मोमिन मर्द (जमा)	70	ज़ुल्म करते

وقف لازم

بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ

बुराई	से	और रोकते हैं	भलाई का	वह हुक्म देते हैं	बाज़

وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ

अल्लाह	और इताअ़त करते हैं	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	और वह क़ाइम करते हैं

وَرَسُوْلَهٗ ۭ اُولٰۗىِٕكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٧١﴾

71	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	कि उन पर अल्लाह रहम करेगा	वही लोग	और उस का रसूल

وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	जारी हैं	जन्नतें	और मोमिन औ़रतों	मोमिन मर्द (जमा)	वादा किया अल्लाह

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ۭ

हमेशा रहने के बाग़ात	में	पाकीज़ा	और मकानात	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें

ع ٩ ١٥

وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٧٢﴾

72	बड़ी	कामयाबी	वह	यह	सब से बड़ी	अल्लाह	से	और ख़ुशनूदी

जिस तरह वह लोग जो तुम से क़ब्ल थे, वह तुम से बहुत ज़ोर वाले थे क़ुव्वत में और ज़ियादा थे माल में और औलाद में, सो उन्हों ने अपने हिस्से से फ़ाइदा उठाया, सो तुम अपने हिस्से से फ़ाइदा उठा लो जैसे उन्हों ने अपने हिस्से से फ़ाइदा उठाया जो तुम से पहले थे, और तुम (बुरी बातों में) घुसे जैसे वह घुसे थे, वही लोग हैं जिन के अ़मल दुनिया और आख़िरत में अकारत गए, और वही लोग हैं ख़सारा उठाने वाले। (69)

क्या इन तक उन लोगों की ख़बर न आई (न पहँची) जो इन से पहले थे, क़ौमे नूह और आ़द और समूद, और क़ौमे इब्राहीम (अ) और मदयन वाले, और वह बस्तियां जो उलट दी गईं, उन के पास उन के रसूल आए वाज़ेह अहकाम ओ दलाइल के साथ, सो अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता लेकिन वह अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे। (70)

और मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें उन में से बाज़, बाज़ के (एक दूसरे के) रफ़ीक़ हैं, वह भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और वह नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात अदा करते हैं, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करते हैं, वही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा, बेशक अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (71)

अल्लाह ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों से जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उन में हमेशा रहेंगे, और सदा बहार बाग़ात में पाकीज़ा मकानात, और अल्लाह की ख़ुशनूदी सब से बड़ी बात है, यह बड़ी कामयाबी है। (72)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ

उन पर	और सख़्ती करें	और मुनाफ़िक़ीन	काफ़िर (जमा)	जिहाद करें	नबी (स)	ऐ

وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٧٣﴾ يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ

नहीं उन्हों ने कहा	अल्लाह की	वह क़समें खाते हैं	73	पलटने की जगह	और बुरी	जहन्नम	और उन का ठिकाना

وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا

और क़सद किया उन्हों ने	उन का (अपना) इस्लाम	बाद	और उन्हों ने कुफ़्र किया	कुफ़्र का	कलिमा	हालांकि ज़रूर उन्हों ने कहा

بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْٓا اِلَّآ اَنْ اَغْنٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

और उस का रसूल	उन्हें ग़नी कर दिया अल्लाह	यह कि	मगर	और उन्हों ने बदला न दिया	उन्हें न मिली	उस का जो

مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا

वह फिर जाएं	और अगर	उन के लिए	बेहतर	होगा	वह तौबा कर लें	सो अगर	अपना फ़ज़्ल	से

يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं	और आख़िरत	दुनिया में	दर्दनाक	अ़ज़ाब	अ़ज़ाब देगा उन्हें अल्लाह

فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٧٤﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ

अलबत्ता-अगर	अ़हद किया अल्लाह से	जो	और उन से	74	कोई मददगार	और न	हिमायती	कोई	ज़मीन में

اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٧٥﴾

75	सालिहीन	से	और हम ज़रूर हो जाएंगे	ज़रूर सदक़ा दें हम	अपना फ़ज़्ल	से	हमें दे वह

فَلَمَّآ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٧٦﴾

76	रूगर्दानी करने वाले हैं	और वह	और फिर गए	उस में	उन्हों ने बुख़्ल किया	अपना फ़ज़्ल	से	उस ने दिया उन्हें	फिर जब

فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ اَخْلَفُوا

उन्हों ने ख़िलाफ़ किया	क्यों कि	वह उस से मिलेंगे	उस रोज़	तक	उन के दिल	में	निफ़ाक़	तो उस ने उन का अन्जाम कार किया

اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ﴿٧٧﴾ اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا

वह जानते	क्या नहीं	77	वह झूट बोलते थे	और क्यों कि	उस से उन्हों ने वादा किया	जो	अल्लाह

اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ

ख़ूब जानने वाला	और यह कि अल्लाह	और उन की सरगोशियां	उन के भेद	जानता है	कि अल्लाह

الْغُيُوْبِ ﴿٧٨﴾ اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिन (जमा)	से (जो)	ख़ुशी से करते हैं	ऐब लगाते हैं	वह लोग जो	78	ग़ैब की बातें

فِى الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ

अपनी मेहनत	मगर	जो वह नहीं पाते	और वह लोग जो	और सदक़ा (जमा) ख़ैरात	में

فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٧٩﴾

79	दर्दनाक	अ़ज़ाब	और उन के लिए	उन से	अल्लाह ने मज़ाक़ (का जवाब) दिया	उन से	वह मज़ाक़ करते हैं

ऐ नबी (स)! काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से जिहाद करें और उन पर सख़्ती करें, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह पलटने की बुरी जगह है। (73)

वह अल्लाह की क़स्में खाते हैं कि उन्हों ने नहीं कहा, हालांकि उन्हों ने ज़रूर कुफ़्र का कलिमा कहा, और अपने इस्लाम (लाने के) बाद उन्हों ने कुफ़्र किया, और उन्हों ने वह कुछ करने का इरादा किया जिसे कर न सके, और उन्हों ने बदला न दिया मगर (सिर्फ़ उस बात का) कि अल्लाह और उस के रसूल (स) ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया, सो अगर वह तौबा कर लें तो उन के लिए बेहतर होगा, और अगर वह फिर जाएं तो अल्लाह उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब देगा दुनिया में और आख़िरत में, और उन के लिए न होगा ज़मीन में कोई हिमायती और न मददगार। (74)

और उन में से (बाज़ वह हैं) जिन्हों ने अल्लाह से अ़हद किया कि अगर वह हमें अपने फ़ज़्ल से दे तो हम ज़रूर सदक़ा देंगे और हम ज़रूर हो जाएंगे सालिहीन (नेकोकारों) में से। (75)

फिर जब उस ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया तो उन्हों ने उस में बुख़्ल किया और वह फिर गए, वह रूगर्दानी करने वाले हैं। (76)

तो (अल्लाह ने) उस का अन्जाम कार उन के दिलों में निफ़ाक़ रख दिया रोज़े (क़ियामत) तक कि वह उस से मिलेंगे, क्यों कि उन्हों ने जो अल्लाह से वादा किया था उस के ख़िलाफ़ किया और क्यों कि वह झुट बोलते थे। (77)

क्या वह नहीं जानते? कि अल्लाह उन के भेद और उन की सरगोशियों को जानता है, और यह कि अल्लाह ग़ैब की बातों को ख़ूब जानने वाला है। (78)

वह लोग जो उन मोमिनो पर ऐब लगाते हैं जो ख़ुशी से ख़ैरात करते हैं, और वह लोग जो नहीं पाते मगर अपनी मेहनत (का सिला), वह (मुनाफ़िक़) उन से मज़ाक़ करते हैं, अल्लाह ने उन के मज़ाक़ (का जवाब) दिया। और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (79)

اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۭ اِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً

बार	सत्तर (70)	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	अगर	उन के लिए	बख़्शिश न मांग	या	उन के लिए	तू बख़्शिश मांग

فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ

और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्हों ने कुफ़्र किया	क्योंकि वह	यह	उन को	बख़्शेगा अल्लाह	तो हरगिज़ न

ع ١٠ ٨ ١٦ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝ ٨٠ فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ

अपने बैठ रहने से	पीछे रहने वाले	खुश हुए	80	नाफ़रमान (जमा)	लोग	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह

خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ

और अपनी जानें	अपने मालों से	वह जिहाद करें	कि	और उन्हों ने नापसन्द किया	अल्लाह का रसूल	पीछे

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۭ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ

सब से ज़ियादा	जहन्नम की आग	आप कह दें	गर्मी	में	ना कूच करो	और उन्हों ने कहा	अल्लाह की राह	में

حَرًّا ۭ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝ ٨١ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ

ज़ियादा	और रोएं	थोड़ा	चाहिए वह हसें	81	वह समझ रखते	काश	गर्मी में

جَزَاۤءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ ٨٢ فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَاۤئِفَةٍ

किसी गिरोह	तरफ़	अल्लाह आप को वापस ले जाए	फिर अगर	82	वह कमाते थे	उस का जो	बदला

مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِىَ اَبَدًا

कभी भी	मेरे साथ	तुम हरगिज़ न निकलोगे	तो आप कह दें	निकलने के लिए	फिर वह आप (स) से इजाज़त मांगें	उन से

وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِىَ عَدُوًّا ۭ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ

बार	पहली	बैठ रहने को	तुम ने पसन्द किया	बेशक तुम	दुश्मन	मेरे साथ	और हरगिज़ न लड़ोगे

فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ۝ ٨٣ وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ

मर गया	उन से	कोई	पर	और न पढ़ना नमाज़	83	पीछे रह जाने वाले	साथ	सो तुम बैठो

اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا

और वह मरे	और उस का रसूल	अल्लाह से	उन्हों ने कुफ़्र किया	बेशक वह	उस की क़ब्र	पर	और न खड़े होना	कभी

وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝ ٨٤ وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا يُرِيْدُ

चाहता है	सिर्फ़	और उन की औलाद	उन के माल	और आप (स) को तअज्जुब में न डालें	84	नाफ़रमान	जब कि वह

اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ ٨٥

85	काफ़िर हों	जब कि वह	उन की जानें	और निकलें	दुनिया में	उस से	उन्हें अज़ाब दे	कि	अल्लाह

وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ

उस का रसूल	साथ	और जिहाद करो	अल्लाह पर	ईमान लाओ	कि	कोई सूरत	नाज़िल की जाती है	और जब

اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝ ٨٦

86	बैठ रह जाने वाले	साथ	हम हो जाएं	छोड़ दे हमें	और कहते हैं	उन से	मक्दूर वाले (मालदार)	आप से इजाज़त चाहते हैं

आप (स) उन के लिए बख़्शिश मांगें या उन के लिए बख़्शिश न मांगें (बराबर है), अगर आप (स) उन के लिए सत्तर (70) बार (भी) बख़्शिश मांगें तो अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़्र किया, और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। **(80)**

पीछे रह जाने वाले अपने बैठ रहने से खुश हुए, रसूल (स) (तबूक के लिए निकलने) के बाद, और उन्हों ने नापसन्द किया कि वह जिहाद करें अपने मालों से और अपनी जानों से अल्लाह कि राह में, और उन्हों ने कहा गर्मी में कूच न करो, आप (स) कह दें जहन्नम की आग गर्मी में सब से ज़ियादा है, काश वह समझ सकते। **(81)**

चाहिए कि वह हसें थोड़ा और रोएं ज़ियादा, यह उस का बदला है जो वह कमाते थे। **(82)**

फिर अगर अल्लाह आप को किसी गिरोह कि तरफ़ वापस ले जाए उन में से, फिर वह आप (स) से (जिहाद के लिए) निकलने की इजाज़त मांगें तो आप (स) कह दें: तुम मेरे साथ कहीं भी हरगिज़ न निकलोगे, और हरगिज़ न लड़ोगे दुश्मन से मेरे साथ (मिल कर), बेशक तुम ने पहली बार बैठ रहने को पसन्द किया, सो तुम पीछे रहजाने वालों के साथ बैठो। **(83)**

उन में से कोई मर जाए तो कभी उस पर नमाज़े (जनाज़ा) न पढ़ना और न उस कि क़ब्र पर खड़े होना, बेशक उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से कुफ़्र किया और वह (उस हाल में) मरे जब कि वह नाफ़रमान थे। **(84)**

और आप (स) को तअज्जुब में न डालें उन के माल और उन की औलाद, अल्लाह तो सिर्फ़ यह चाहता है कि उन्हें उस से दुनिया में अज़ाब दे और (उस हाल में) उन की जानें निकलें जब कि वह काफ़िर हों। **(85)**

और जब कोई सूरत नाज़िल की जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उस के रसूल (स) के साथ (मिल कर) जिहाद करो तो उन में से मक्दूर वाले आप से इजाज़त चाहते हैं, और कहते हैं हमें छोड़ दे कि हम बैठ रह जाने वालों के साथ हो जाएं। **(86)**

رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

उन के दिल	पर	और मुहर लग गई	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ	हो जाएं	कि वह	वह राज़ी हुए

فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٨٧﴾ لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

उस के साथ	ईमान लाए	और वह लोग जो	रसूल	लेकिन	87	समझते नहीं	सो वह

جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ۫

भलाइयां	उन के लिए	और यही लोग	और अपनी जानें	अपने मालों से	उन्हों ने जिहाद किया

وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٨٨﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

जारी हैं	बाग़ात	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	88	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग

ع ١١ ٩ ١٧

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٨٩﴾

89	बड़ी	कामयाबी	यह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	बैठ रहे	उन को	कि रुख़सत दी जाए	देहाती (जमा)	से	बहाना बनाने वाले	और आए

كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ

उन से	उन्हों ने कुफ़्र किया	वह लोग जो	अ़नक़रीब पहुँचेगा	और उस का रसूल	अल्लाह	झूट बोला

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٩٠﴾ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا

और न	मरीज़ (जमा)	पर	और न	ज़ईफ़ (जमा)	पर	नहीं	90	दर्दनाक	अ़ज़ाब

عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ

अल्लाह के लिए	वह ख़ैर ख़ाह हों	जब	कोई हर्ज	वह ख़र्च करें	जो	नहीं पाते	वह लोग जो	पर

وَرَسُوْلِهٖ ؕ مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٩١﴾

91	निहायत मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	कोई राह (इल्ज़ाम)	नेकी करने वाले	पर	नहीं	और उस के रसूल

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ اِذَا مَآ اَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ اَجِدُ

मैं नहीं पाता	आप ने कहा	ता कि आप (स) उन्हें सवारी दें	आप के पास आए	जब	वह लोग जो	पर	और न

مَآ اَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ۖ تَوَلَّوْا وَّاَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ

आँसू (जमा)	से	बह रहे थे	और उन की आँखें	वह लौटे	उस पर	तुम्हें सवार करूं

حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ

वह लोग जो	पर	रास्ता (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	92	वह ख़र्च करें	जो	कि वह नहीं पाते	ग़म से

يَسْتَاْذِنُوْنَكَ وَهُمْ اَغْنِيَآءُ ۚ رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا

वह हो जाएं	कि	वह खुश हुए	ग़नी (जमा)	और वह	आप (स) से इजाज़त चाहते हैं

مَعَ الْخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٩٣﴾

93	नहीं जानते	सो वह	उन के दिल	पर	और अल्लाह ने मुहर लगादी	पीछे रह जाने वाली औरतें	साथ

वह राज़ी हुए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ हो जाएं, और मुहर लग गई उन के दिलों पर, सो वह समझते नहीं। (87)

लेकिन रसूल (स) और वह लोग जो उन के साथ ईमान लाए उन्हों ने अपने मालों से और अपनी जानों से जिहाद किया, और उन्हीं लोगों के लिए भलाइयां हैं, और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (88)

अल्लाह ने उन के लिए बाग़ात तैयार किए हैं, उन के नीचे नहरे जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (89)

और देहातियों में से बहाना बनाने वाले आए कि उन को रुख़सत दी जाए, और वह लोग बैठ रहे जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) से झूट बोला, अ़नक़रीब पहुँचेगा उन लोगों को दर्दनाक अ़ज़ाब जिन्हों ने कुफ़्र किया। (90)

नहीं कोई हर्ज ज़ईफ़ो पर और न मरीज़ों पर, न उन लोगों पर जो नहीं पाते कि वह ख़र्च करें, जब कि वह ख़ैर ख़ाह हों अल्लाह और उस के रसूल के, नेकी करने वालों पर कोई इल्ज़ाम नहीं, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (91)

और न उन लोगों पर (कोई हर्ज है) कि जब आप (स) के पास आए कि आप उन्हें सवारी दें, तो आप (स) ने कहा कि (कोई सवारी) नहीं कि उस पर तुम्हें सवार करूं, तो वह (उस हाल में) लौटे और ग़म से उन की आँखों से आंसू बह रहे थे कि वह कुछ नहीं पाते जो वह ख़र्च कर सकें। (92)

इल्ज़ाम सिर्फ़ उन लोगों पर है जो आप (स) से इजाज़त चाहते हैं और वह ग़नी (माल दार) हैं, वह उस से खुश हुए कि वह रह जाएं पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ, और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, सो वह कुछ नहीं जानते। (93)